अध्याय चार

नासिरा शर्मा की कहानियों में मानवतावाद की अभिव्यक्ति

अध्याय चार
नासिरा शर्मा की कहानियों में मानवतावाद की अभिव्यक्ति

मानवतावाद एक अति प्राचीन मत है। सामान्यतः मानवतावाद मानव मूल्यों और गौरव की स्थापना करनेवाली विचारधारा को कहा गया है। वह मानवजाति की अद्वितीय मार्गदर्शक एवं उत्कृष्ट आचार संहिता है। इसका सामान्य अर्थ मनुष्यत्व होता है। यह मानवीय मूल्यों को एक नया अर्थ प्रदान करता है, तथा इसका निर्माण मानवीय संबन्धों के फलस्वरूप होता है। मानवतावाद शब्द मनुष्य को सर्वोच्य मानने की प्रवृत्ति की ओर इंगित करता है। इसलिए इसकी परिभाषा यों दी गयी है - "यह एक ऐसी विचारधारा है जिसमें मानव हितों को प्रमुख माना जाता है तथा मानव के गुण, दया, करुणा, परोपकार, उदारता, सहिष्णुता, भ्रातृत्व-भाव, त्याग, तप, श्रद्धा तथा आतिध्य भाव आदि गुणों का विकास एवं प्रसारण करता है।"[1] इसका लक्ष्य मनुष्य की महत्ता को सृष्टि के माध्यम से सुदृढ़ करके विशिष्ट रूप से शाश्वत और निपेक्ष मूल्य प्रदान करना है।

4.1 मानवतावाद : शब्दावली एवं भावना

अंग्रेज़ी भाषा में मानवतावाद को ह्यूमनिज़्म (Humanism) कहा गया है। वस्तुत ह्यूमनिज़्म शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द ह्यूमन्स से हुई है। जिस शब्द का अर्थ है मानव मानवीयता का विचार सभ्य समाज में एक ओर संपूर्ण मानव जाति से है तथा दूसरी ओर मानव-मूल्य की गरिमा से है। मानवतावाद के अन्तर्गत मनुष्य की

---

1. भारतीय दर्शन - सूर्यमणि - पृ. 61

समस्याओं के विवेचन को सर्वाधिक महत्व दिया जाता है। इसका मूल उद्देश्य मनुष्य की महत्ता पर विचार करना, उसके हितों की बात करना उसके कल्याण की बात करना तथा विश्व शांति की स्थापना करना है। यह मानवतावादी दर्शन मनुष्य के अन्दर से हिंसा, निराशा, कुठा को दूर करते हुए संपूर्ण मानव जाति की सर्वांगीण उन्नति का प्रयास करता है। मानव जाति के कल्याण से मानवतावाद का घनिष्ठ संबन्ध है। यह जनसाधारण की समस्याओं का व्यवहारिकता के आधार पर समाधान करके जीवन को सुखी बनाता है।

4.2 मानवतावादी विचारधारा का स्वरूप

उन्नीसवीं शताब्दी में 'हिन्दु नवोत्थान' के साथ मानववादी स्वर ओजस्विता के साथ अग्रसर हुआ। इस नवोत्थान के संदर्भ में मानव के सोचने की क्रिया में कुछ परिवर्तन हुआ। अब व्यक्ति की विचारधारा देवता मण्डलों से हटकर समाज के निश्चित स्वरूपों पर केन्द्रित हुई एवं उसने निवृत्तिमार्ग को छोडकर प्रवृत्ति मार्ग का पथ ग्रहण किया। इस परिवर्तन के फलस्वरूप जन-जीवन से निष्क्रियता समाप्त हुई और कुछ ऐसे विचारकों का आविर्भाव हुआ जिन्होंने समाज और मनुष्य की नूतन व्याख्याएँ प्रस्तुत की। वैचारिक विकास की यह परंपरा सर्वतोभावेन मानवतावादी थी। मानवतावादी दर्शन का विकास हमें पाश्चात्य विचारकों की रचनाओं में परिलक्षित होता है। उसके विकास की एक निश्चित परंपरा भी। वह विभिन्न विचार सारणियों से होती हुई आधुनिक काल तक निरंतर विकसित होती आई है।

मानवतावाद की भावना आदि काल से चली आ रही है, क्योंकि इसका संबन्ध मानव के सहज स्वाभाविक गुणों एवं विकास से है। मानवतावाद सामान्य मानव के लिए कर्तव्य एवं धर्म है। इसमें भावुकता तथा सहज आर्द्रता है। मानवतावाद में यह विश्वास है कि प्राकृतिक मानव स्वतःपूर्ण है, इसलिए मानवीय मूल्य हमारे लिए महत्वपूर्ण

है तथा इसमें आदर्श प्रेम को महत्व देता है। इसमें जीवन की साधारण आवश्यकताओं, सामान्य जीवन मूल्यों को अधिक महत्व देता है। उनके व्यवहारिक स्वरूप का भी चिंतन करता है। मानव मूल्यों द्वारा मानवतावाद संसार का सुधार ही नहीं करना चाहता बल्कि उसे आदर्श भी बनाना चाहता है।

4.3 मानवतावाद और साहित्य

साहित्य में मानवतावादी विचारधारा ने मानव की समस्याओं का अध्ययन करके उनके जीवन के महत्व को स्वीकार किया है। मानवतावाद मनुष्य की अभिवृद्धि में न सिर्फ सहायक है बल्कि वह मनुष्य की समस्याओं का निवारण भी करता है। मानवतावाद को किसी विशेष साहित्य समुदाय की वस्तु के रूप में नहीं बल्कि समस्त कला के प्राण तत्व के रूप में मान्यता दी है। हिन्दी लेखकों की दृष्टि में मानवतावाद एक प्रमुख चिन्तनधारा है। साहित्य से उसका संबन्ध अत्यधिक है। नंददुलारे वाजपेयी के अनुसार "मानवतावाद मानवीय स्वतंत्रता और कर्तव्य का आख्यान करनेवाली प्रेरक दृष्टि है। मानवतावाद जहाँ तक मनुष्य की स्वतंत्र संकल्प शक्ति का आख्यान करता है, मनुष्य को एक विशिष्ट गौरव का पद प्रदान करता है, वहाँ तक उस की मौलिक प्रेरणा स्वतंत्रता से युक्त है। वर्तमान युग में हमने केवल विदेशी शासन के ही नहीं, किन्तु अपनी पुरानी मन रूढ़ियों के बंधन भी तोड फेंके हैं। फिर से एक नए जीवन की ओर अपना अभियान आरंभ किया है। हमारी यह परिस्थिति स्वभावतः ऐसे दृष्टिकोण को हमारे हृदय के समीप लाती है, जिसमें स्वतंत्रता और मानवीय कर्तव्य की प्रधानता हो।"[1]

4.4 मानवतावाद और नासिरा शर्मा

हिन्दी लेखकों की दृष्टि में मानवतावाद आज भी प्रमुख चिंतनधारा है। नासिरा शर्मा मानवतावादी दृष्टिकोण रखनेवाली लेखिका है। मानवतावाद द्वारा वे विश्व

---

1. ब्रजभूषण शर्मा - मानववाद और मानवतावाद - पृ. 94

प्रेम को महत्व देती है। नासिराजी की कहानियों में स्त्रीवादी दृष्टिकोण की अंकन हुआ है फिर भी वे स्वयं स्त्रीवादी होने से इनकार करती है। स्त्रीवादी लेखन हमेशा व्यक्तिवादी बन जाता है। मानवतावादी होना ही उन्हें ज्यादा अच्छा लगता है। उन्होंने केवल भारत की ही नहीं बल्कि संपूर्ण विश्व की समस्याओं को लेकर अपनी लेखनी चलायी है। मानवतावादी विचारधारा सारे मनुष्य के कल्याण के लिए है। उसने तो विश्व बन्धुत्व, भातृत्व व सामूहिक अस्तित्व की अभिव्यक्ति की है। नासिरा शर्मा का सबसे मज़बूत पक्ष विश्व के विभिन्न देशों, समाजों का उनका अनुभव और राजनीतिक अवस्था है। उनकी कहानियों में मानव सभ्यता का इतिहास, मनुष्य का विकास, समाज, संस्कृति, साहित्य और स्त्री की चिंता से गहरे जुडे कई मुद्दों का प्रयोग किया गया है।

4.5 नासिरा शर्मा की कहानी और मानवतावाद

नासिरा शर्मा अपनी कहानियों में आदमी और आदमी के जीवन और जगत को और उसके सच को उफेरने केलिए निरंतर व्याकुल नज़र आती है। तभी तो तमाम तरह की भयानकताओं आतंकों और क्रूरताओं के बीच भी वे अपनी कहानियों में प्रेम और आत्मीयता ढूढ निकालती है। मानवता नासिराजी की कहानियों का केन्द्रबिन्दु है। विश्व भर में आज मानवता का क्रन्दन हो रहा है। उसे देखकर नासिराजी दुःकी है तथा उन्होंने अपनी कहानियों में इन्सानी जिजीविषा की खोज की है। वे अपनी कहानियों में मनुष्य की बुनियादी आवश्यकताओं (रोटी, कपडा, मकान) और मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार (स्वतंत्रता, और स्वाभिमान) के लिए आवाज़ उठाती है।

नासिराजी की कई कहानियों में मानवता की जरूरतों के उल्लंघन का मूर्तरूप प्रस्तुत हुआ है। आज मानवीयता नष्ट होकर तरह-तरह के कुचक्र रचे जा रहे हैं। सब कहीं मानव अपने अधिकारों से वंचित है। उनकी रचना संसार व्यापक है। एक

स्वतंत्र पत्रकार के तौर पर वे कभी ईरान जाती है, कभी ईराक जाती है, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, जापान, फ्रांस आदि कई जगहों में जाती हैं। इसी तरह दुनिया भर घूमने से जो अनुभव उन्हें हुआ है उसी के आधार पर नासिराजी ने वहाँ के सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक वातावरण को लेकर कई कहानियों का सृजन किया है।

4.6 नासिराजी की कहानियों में मानवतावादी विचार

मानवतावादी दृष्टिकोण रखनेवाली नासिराजी अपनी कहानियों में आदमी के जीवन और जगत की सच्चाई का चित्रण करने में निरंतर व्याकुल रहती है। इनकी कहानियों में मुख्यतः आर्थिक विसंगतियों से उभरी सामाजिक समस्याओं तथा अरथतत्व में टूटते बिखरते मानवीय संबन्धों का चित्रण हुआ है। नासिरा जी अपनी कहानियों में किसी न किसी तरह मानव हित व कल्याण बात उठाती है। इसके लिए उन्होंने मानव के विभिन्न पहलुओं का अंकन अपनी कहानियों में किया है। दरअसल उनकी कहानियों में मानव को प्रमुखता देकर उनकी समस्याओं को पाठकों के सामने विचार-विमर्श करने की कोशिश की गई है।

4.6.1 मानवीय संबन्धों में दरार की अभिव्यक्ति

भारत का बँटवारा और उससे उपजी त्रासदी आज भी हम भारतीयों को पीछा नहीं छोड रही है। उनकी 'अमोख्ता' नामक कहानी में नासिराजी ने बढ़ती हिन्दु-सिख शत्रुता का चित्रण किया है। इस कहानी में नई जिन्दगी तीसरी बार शुरू किए एक बर्बाद खानदान का चित्रण है। वहअपनी आखिरी बचे पोते को विदेश भेजने का निर्णय लेता है। क्योंकि बढ़ती दुश्मनी ने देश को इतना कलुषित बना दिया कि उन्हें भारत में अपने बच्चे का भविष्य नज़र नहीं आता था। बढ़ता गृह युद्ध का दबा आक्रोश दिलों को टूटने और

देश को बिखरने से नहीं बचायेगा। इसलिए अमोख्ता में कथावाचक फैसला करता है - "मुझे मोह के बंधनों को काटना अभी से बबलू को सिखाना होगा। ज़मीन से जुडे रहने के बेमानी सपने से उसे जगाना होगा। इससे पहले कि उसकी जडें इस जमीन पर गहरी जमने लगे, उसको निकालकर मुझे उसे वहाँ भेजना होगा, जहाँ वह स्वयं सुरक्षित रहे, बिना किसी कुंठा, बिना किसी सियासी नाम और प्रताड़ित पहचान के वह अपने काम से अपने व्यवहार और व्यक्तित्व से जाना जाए।"[1] इसमें धर्म निरपेक्ष देश भारत में जाति और धर्म के नाम पर मानवीय अधिकार के उल्लंघन को ही दिखाया गया है। कथावाचक अपने पोते की सुरक्षा धार्मिक देश भारत में नहीं किसी विदेशी राष्ट्र में ही देखता है। इस कहानी में जलते पंजाब का चित्रण मार्मिक ढंग से किया गया है। हमले में बाज़ार खाक थे, और घर राख। अपने पराये थे और पराये अपने। जिन्दगी का चेहरा बदल चुका था। कथावाचक अपने पोते को विदेश भेज देता है। उसे लगता है कि - "भारत में सब विभिन्न धर्म, जाति, वर्ग समुदाय में बंटे हुए है, सब एक दूसरे को नोच रहे है, कोई किसी का दोस्त नहीं, कोई किसी का संबन्धी नहीं। बस एक अल्पसंख्यक वर्ग जरूर खुश है, मस्त है, जिसका नाम राजनीतिक है।"[2]

4.6.2 दहशत से भरी मानव मन की अभिव्यक्ति

'सबीना के चालीस चोर' में भारत विभाजन के बाद के फसाद में अपनी संपत्ति तथा प्रियजन को खोये जनता की मनोदशा का ही चित्रण है। भारत विभाजन के बाद के फसाद देखती भोगती सकीना थक गई थी। फिरोज़बाद के फसाद में उसने अपने भाई रियास को खो दिया था। उसका न कोई लाश मिली और न कोई खबर अब पन्द्रह

---

1. इब्ने मरियम (अमोख्ता) नासिरा शर्मा - पृ. 19
2. वही

साल की जमीं गृहस्थी हो गयी है। सामान के नाम पर सिर्फ गाडी बची थी। सकीना अपनी पन्द्रह साल की अवस्था में दिल्ली से भागने में कामयाब हो गई। सकीना घर और सामान के भय से अपने को निकाल नहीं पाती है। जब कोशिश करके उसको निकाल भी तो कोई नया फसाद सारी मेहनत पर पानी फेर जाता है। सकीना के अन्दर एक ऐसा डर दबा सहमा बचपन से बैठा है जो हर फसाद से उसके अन्दर जाग उठता है और जो कभी क्रोध में, कभी झुँझलाहट और कभी बेबसी में बदल जाता है क्योंकि उसका बचपन डर और देहशत से भरा हुआ था। मौत हर बार करीब आकर कहीं छुप जाती थी। फसाद पर बडों की गर्मा-गर्म बाते सुनकर सबीना ऐसा प्रश्न पूछती रहती है कि इन्सान क्या है? बेटी की ये सवाल सुनकर शहरूख के दिमाग में कई तरह के सवाल उभर रहे थे कि इस नन्हें दिमाग में यह माहौल किस तरह का बुनियाद डाल रहा है। जो बात बच्चों को बताई और सिखाई नहीं गई उससे उन्हें अलग रखा। आज वह किस तरह अपने शिकंजे में जकड रही है। उन्हें किस जबान में और कैसी बातें समझाये जायें। इसमें नासिरा सन् सैतालीस के बाद भारत में हुए फसाद का यथार्थ चित्रण करती है और इसके माध्यम से मानवहित व कल्याण की कामना भी करती है।

4.6.3 सियासत की बढ़ती सत्ता में जनता की विवशता

'तीसरा मोर्च' कहानी में काश्मीर के दंगे फसाद में काश्मीरी जनता खासकर काश्मीरी पंडितों की विवशता का ही चित्रण है। काश्मीर में बढते दंगे तथा फसाद को देखकर रहमान के बूढ़े माँ-बाप काफी दिनों से ज़िद बाँधों हुए थे कि इससे पहले कि सिर पर कफन बाँधे दस्ते उसे उठा ले जाएँ। वह कुछ दिनों के लिए कहीं गायब हो जाए। ऐसा न करने पर वह भी दूसरे नौवजवानों की तरह घर ले लिया जायेगा और गलत रास्ते पर चलने पर मज़बूर हो जायेगा। अंत में सुरक्षा पुलिस एवं फौज की गोली का निशाना बन

मर जायेगा। यद्यपि कालेज के कई दोस्तों ने तय किया था कि वे किसी भी हालत में काश्मीर नहीं छोडेंगे। रोज़ रोज़ के दबाव से तंग आकर रहमान तथा उसके मित्र राहुल कुछ महीने दूर दरवाजे के किसी इलाके में जाने पर राज़ी हो गये थे। लकिन मार्ग में देशद्रोहियों के अत्याचार के शिकार बनी एक स्त्री को देखते हैं। रहमान तथा राहुल उस स्त्री की सहायता करने के लिए तैयार हुए। उसका पता पूछते हुए बता दिया कि अगर वह हिन्दु है तो राहुल की बहन तथा मुसलमान हो तो रहमान के। वह रिशते से उन दोनों के बहन ही होगी। उस औरत ने बता दिया कि - "मैं एक औरत हूँ और औरत की किस्मत तो हिन्दु-मुसलमान नहीं होती। जो हिन्दु और मुसलमान तो सिर्फ वह मर्द होते है जो अपने मज़हब के उन्माद में औरत की आबरू लूटकर अपने धर्म निभाते हैं।"[1] वह दो बच्चों की माँ है। बच्चों के बाप साल भर से लापता है। जब दंगाइयों ने उसके शौहर का पता पूछा तो वह कुछ नहीं बता पाई। उन्होंने भूखे चूहे उसकी शलवार में डाल दिए और उसके दोनों बच्चे को इतना पीटा कि वे दम तोड दिए। उन्होंने उसकी इज्जत लूट ली। रहमान तथा राहुल को ऐसा लगा कि धर्म का तंग दायरा ही घुटने का अहसास नहीं दे रहा है। सियासत की बढ़ती सत्ता में इन्सानियत विलाप कर रही है। वह औरत उनके साथ काश्मीर छोडने के लिए तैयार नहीं होती बल्कि अपने कर्तव्य की ओर उसका ध्यान आकृष्ट कराती हुई कहती है - "मैं माँ हूँ, मुझे बच्चों को दफनाना है। पत्नी हूँ... मुझे अपने शैहर का इन्तज़ार करना होगा। औरत हूँ इसलिए जुल्म के खिलाफ मुझे जिन्दा रहना है। मुझे भागना या मुँह छुपाना नहीं है। मुझे अभी जिन्दा रहना है।"[2] उस स्त्री से प्रेरणा पाकर वे दोनों अपने निर्णय से विचलित हो जाते हैं और काश्मीर लौट आते हैं।

---

1. तिसरा मोर्चा - नासिरा शर्मा - पृ. 68
2. वही - पृ. 68

इस कहानी में सियासत की बढ़ती सत्ता में काश्मीरी जनता की विवशता की ही अंकन हुआ है। देशद्रोहियों के अत्याचार में बहुत सी काश्मीरी पंडित तथा नौजवान मारे गये। इन अत्याचारों से भयभीत होकर बहुत से लोग देश से भाग गये। काश्मीर में बढते दंगे तथा फसाद में मानव जीवन दुभर हो गया था।

4.6.4 मानवीय अधिकारों से वंचित स्त्रियों का चित्रण

'इब्ने मरियम' कहानी का मुख्य किरदार ताहिर बटुएवाला है। कहानी का परिवेश भोपाल है और वर्जित दुर्घटना गैस त्रासदी है। ताहिर की छोटी बेटी सुगरा को उसके ससुरालवाले भोपाल गैस त्रासदी के असर के अपंग बच्चे पैदा करने के डर से छोडे देते तो वात्सल्य से ओत प्रोत पिता का मानसिक संतुलन बिगड जाता है। पागल ताहिर सारे दिन पम्पवाला स्टोव के लिए पूरे शहर में गैस की टांक के फटने का किस्सा कहता घूमता है। जहाँ पर ताहिर कब्रों को गिनता फुस फुसाकर कहता है - "सब्र करो, थोडा सब्र अब वह आने ही वाला है। किसी लमहे, किसी पल तुम सब जिन्दा हो जाओगे, यकीन करो वह आएगा, बस अब वह आनेवाला है।"[1] अंत में खुद ताहिर भूख, गर्मी और सदर्मी से मर जाता है।

इसमें यही दिखाया गया है कि मानव अधिकार की फिलहाल कोई भूमिका नहीं रह गई है। भोपाल गैस त्रासदी के कुप्रभाव से उस समय उस प्रदेश की लडकियों का कोख प्रभावित होगी। इसी विचार से बहुत स्त्रियों को उनके पति छोड दिये थे। अपने अधिकारों से वंचित किये थे। इसमें भी सुहारा तथा रामधन की बेटी गीता को उसके ससुराल ने छोड दिया था। अपने अधिकारों से वंचित किया था। उनका कहना था कि वे अपनी नस्ल को खराब करना नहीं चाहता।

---

1. इब्ने मरियम - नासिरा शर्मा - पृ. 159

4.6.5 शिक्षित बेरोज़गार मानव

'भूख' कहानी में नासिराजी शिक्षित बेरोज़गारी समस्या को अंकित करती हैं। रिज़वान को किहान अखबार में इस शर्त पर काम मिला था कि वह चंद लेख पहले दे दे। उसे पाँच लोगों के नाम और पत के साथ इंटरव्यू करके लाने को कहा। पूरे बाज़ार में घूमने के बाद इन लोगों को पकडना मुश्किल था। फिर इनसे कुछ कहलवाना और भी कटिन था। जब रिज़वान से बताया गया कि नई सरकार ने उनकी मदद के लिए उसे भेजा है, ताकि उनसे बातें करके परेशानी समझकर आराम देह जिन्दगी दे सकें। सरकार के इस प्रलोभन में आने के लिए वे तैयार नहीं होता। पिछली बार भी उन्हें ऐसा बहकाया था, लेकिन जुलूस के बाद कुछ भी न दिया। रिज़वान को घर की परेशानी याद आयी। सात बजे उसको अपने इंटरव्यू आफिस में देना था। उसने सुबह से कुछ भी नहीं खाया था। जेब में बस पास के अलावा कुछ न था। इंटरव्यू के लिए उसे कोई नहीं मिला तो उसने जो कुछ लिखा उस पर अपना नाम और पता लिखकर उसे दफ्तर में पहुँचा दिया। जब बाहर निकला तो उसका इत्मीनान था कि कल वह फिर काम पर आयेगा। मगर यह परेशानी थोडी देर मथने लगी कि वह कल किसका नाम और पते की तलाश करेगा। उसने सिर झुककर जैसे अपने से कहा कल तक कौन जिन्दा रहता है।

इस कहानी में नासिराजी ने साधारण जनता की विवशता, निराशा, कुंठा, घुटन, बेकारी जीवन की अस्थिरता आदि का चित्रण किया है। शिक्षित बेरोजगारों की संख्या आज बढ़ गयी है। देश के नवयुवकों को भविष्य के प्रति कोई आशा, स्वप्न, तथा सासकों की वाणी में कोई विश्वास भी नहीं।

4.6.6 आपस में लडते-लडाते मानव

'आया बसंद सखी' कहानी में नासिराजी लखनू के चिकन व्यापारी का चित्रण करती है। लाला रस्तोगी अपने मज़दूरों को कम मजदूरी देकर अपना माल महंगे बेचता है। इससे लाल रस्तोगी के कुछ दस्ताकारों ने मिलकर अपना काम स्वयं करना शुरू कर दिया। लेकिन अपने मज़दूरों की यह सरकशी लाला को न भाया। उनके अनुसार जो दस्तकार उनसे रिश्ता तोड लिया है उन्हें किसी कीमत पर जीने नहीं देना है। इसी उद्देश्य से वे बदमाशों की सहायता से नौरोज़ के दिन शहर में सुन्नी शिया फसाद चलवाते हैं। इसमें सुलताने के सारे माल के साथ सायरा का सपना भी जलकर राख हो गया। सुलताना के पति रंगाई-पुताई का काम करके घर अच्छी तरह संभालता था। लेकिन वर्षों पहले के सुन्नी शिया फसाद में वहमर चुका था। दूसरे साल के फसाद में उसके दो बेटे भीड में कुचलकर मर गये और तीसरे कही गुम हो गया। अब टी.बी के शिकार सायरा और बख्न उसके पास बचे थे। सुलताना चिकन का काम करके चार पैसे की आमदनी कर लेती थी, और सायरा का ऑपरेशन बसंत महीने में निश्चय भी कर लिया था। अब सारे सपने में पानी गिर गया है।

सुन्नी-शिया फसाद हुए अभी दो दिन ही गुजरे थे मगर मरनेवालों और तबाह होनेवाली चीज़ों की संख्या अनगिनत थी। फसाद के बाद व्यापारियों के पास सस्ते दस्तकारों की भीड फिर लग गई और दो वक्त चूल्हा जलना बन्द हो गया। मगर सभी चिकन दस्तकार आँखें पोछकर सुई-धागा लेकर हमेशा की तरह दोबारा बैठ गए। जब दो दिन का फाका गुज़ारा तो सायरा अपने को रोक न सकी। अपनी माँ से पूछा अम्मा बसंत अब नहीं आयेगा? इस पर जुलैखा ने कहा "ये लोग बसंत नहीं आने देगे, फूल कभी नहीं खिलने देगे जख्मों को नहीं भरने देगे। इन्हें तो मैं बहुत दिनों से जानती हूँ, बन्नो, बहुत

दिनों से। फिर यह फसाद मुझे नया जख्म दे गया। तेरा आखिरी भाई भी इस फसाद की नज़र हो गया।"[1] इसमें सुन्नी शिया फसाद की आड में चिकन दस्तकारों के अधिकारों का उल्लंघन किये गये चिकन व्यापारियों का ही चित्रण है।

4.6.77 अधिकारियों की हीनता

'नौ-तपा' कहानी में बब्बन कुजंडे जिसका पुलिसवालों के साथ भाई चारा है। वह सल्मान कलईगर और उसकी पत्नी को मारकर उनके घर में आधिपत्य जमा लेता है। उनका एकमात्र लड़का नौ साल का समीह घर से भागा। समीह ने अपना नाम लच्छमन जायसबाल रख दिया और मोहल्ले में बर्तनों का कलई करके घूमता फिरता है। इसी बहाने वह उस घर के ताँबे के बर्तनों का कलई करता जहाँ उसके बचपन की यादें ताज़ा हो जाती और उन बर्तनों पर अंकित अपनी माँ के नाम जेब अख्तर को अपनी थकी उंगलियों से फेर लेता और बेकरार उस नाम को चूम लेता, काम समाप्त होने पर फिर आकर हिसाब ले लूँगा कहकर वह चला जाता है। अन्तिम बार जब वह उस घर कलई करने आया तो पता चला कि बब्बन कुजडे की बहू ने सारा बर्तन भाँडा बेच डाला और अब ताबे की जगह स्टील भरा है। यह सुनकर लच्छू आहत सा तडप उठा। उसने आगे कहा - "यह मेरी माँ जेब अख्तर के बर्तन थे जो इस घर में रहती थी, यह घर मेरे बाप का घर है। सब जानते है, पर तुम लोगों से डरकर खामोश है। मगर अब मैं चुप नहीं रहूँगा। चीख चीखकर सबको बताऊँगा कि यह मेरा घर है, मेरा नाम समीह है, समीह।"[2] इस पर बब्बन कुंजडे के छोटे लडके ने लोहे की छड और साइकिल की चेन लेकर उस पर आक्रमण करने लगे। इतने में जाने कहाँ से तेल पी लाठी लिए आठ दस लठैत आ

---

1. आया बसंत सखी (सबीना के चालीस चोर) - पृ. 184
2. नौ तापा (सबीना के चालिस चोर) नासिरा शर्मा - पृ. 154

गये और वे लच्छू पर टूट पडे। सारा मोहल्ला लठबाज़ों का संदेशा समझकर मन ही मन गाली देते हुए खिड़कियाँ दरवाज़े बन्द करने लगे। इसमें पुलिस तथा गुण्डों के बल पर निरीहों के धन संपत्ती को हडपनेवाले अत्याचारियों का चित्रण है।

4.6.8 मानवता से दूर होता मानव

'बुतखाना' में दिल्ली जैसे महानगर के जिस युवक के साथ रमेश ने सिनेमा देखा और काफी देर साथ बैठकर बातें करते रहे, उस युवक के किसी बस के पहिए के बीच कुचलते देखकर दूसरे यात्रियों के जैसे रमेश भी बयान देने के झंझट से बचने के लिए उस हादसे के सामने मुँह मोड लेता है। इस पर उसका अंतःकरण उससे कहता है कि अपनी बचन के लिए भागनेवाला वह उस बुतखाने का एक बुत मात्र है। इसमें यही दिखाया है कि महानगरों में आदमी आज आदमी नहीं रहा है। मनुष्य में स्नेह और अपनत्व के भाव खत्म होते जा रहे हैं। आज मनुष्य में दूसरों के प्रति करुणा तथा सहानुभूति की भावना नहीं है।

4.6.9 गरीबों के अधिकार हडपनेवाले अमीर

'सतघरवा' कहानी में घर के बगीचे में नीम के पेड पर लगे मधुमक्खियों के छत तोडने आये पठान युवक अब्दुल के साथ दादीजान का संबन्ध बना रहता है। लेकिन साहब तथा मेमसाहब को ये संबन्ध पसंद नहीं था। अब्दुल दादीजान को प्यार दिखाता है और छाता तोडने पर जो शहद मिलता है, उसे अपनी दादी समझकर देता भी है। दादीजान भी उसे चाय पिलाकर उससे बातचीत करती रहती है। उस बडे बंगले में नौकर-चाकर, बेटे बहू पोता-पोती के बीच मीठे बोल सुनने और अपनी बात कहने को तरसती माताजी को अब्दुल बहुल भला लगा था। एक दिन अपनी माता की मृत्यु की

खबर दादीजान को देने आये अब्दुल को मेमसाहब पुलिस थाने में फोन कर पुलिस से पकडवा लेती है। बाद में इस शर्त पर उसे छोड देता है कि आगे इस शहर का रुख नहीं करेगा। इसमें धन वैभव का धमण्ड में गरीबों पर अधिकार जमानेवाले संपन्न वर्ग का ही चित्रण है।

4.6.10 पारिवारिक संबन्धों में बदलाव

'एक न समाप्त होनेवाली प्रेमकथा' में चन्द्रा का अपने पति के प्रति आमनवीय आचरण का भयानक चित्र ही उपस्थित किया गया है। सिद्धार्थ और रमा को अपने नए मकान के आसपास की आवाज़ों में बस एक ही आवाज़ रहस्यमय लगी थी। वह बच्चों के शोर में कुत्तों के धीमे धीमे रोना, जैसे वे इंसान हो जो अपनी पीडा को निचोड रहा हो। नीचे के घरवालों का यह कुत्ता उनके नर्वस को हिलाकर रख देता है। एक दिन रमा नीचे के घर में पहुँची। वहाँ उसके पाँच वर्षों से पैरालेटिक चंद्रा का पति आकाश को देखा। कमरे के सामने आंगन में एक कोठरी की चौखट पर काले, सफेद रंग का एक कुत्ता बंधा था। एक रात ब्रैन हैमरेज से आकाश की मृत्यु हो जाती है। देह संस्कार के लिए इक्कट्ठे औरतों तथा मर्दों के खुसुर फुसुर से रमा को पता चला कि चन्द्रा ने यह मकान अपने पति के जाली दस्तरक से ही प्राप्त कर लिया है। जब आकाश मकान पत्नी के नाम करने तैयार नहीं हुआ तो पत्नी ने उसका खाना बंद कर दिया था। उसने अपने बचपन के दोस्त को बीमार बनाकर कचहरी ले गया और जाली दस्तख्त से मकान हडप लिया था। यह कहानी पति-पत्नी के संबन्धों में आये नैतिक मूल्य विघटन की ओर इशारा करती है। आज परंपरागत नैतिक आदर्श टूटते जा रहे हैं। और पारिवारिक संबन्धों में बदलाव आ गया है। इसमें पत्नी पति के प्रति अमानवीय आचरण करती है। परिणाम स्वरूप वह तिल-तिल होकर मिट जाता है।

4.6.11 मानव में नैतिक मूल्यों का अभाव

'चिमगादडे' कहानी में प्रिंसिपल मिस गोवा आदर्श लगन तथा मेहनत से अपने स्कूल को बदहाली से बचाती है। लेकिन बाद में आये प्रिंसिपल मिसिस हुसैन अपने स्वार्थ लाभ के लिए उसे अवनति में डालती है। पहले जिस स्कूल तथा दीवारे दरकती तथा रिसती रहती थी, आज हर दीवार बेदाग थी। चाँदनी में नाहाई हुई, मगर स्कूल की आत्मा कही खो गई थी। मिस गोवा ने जो कुछ भी पिछले सालों में अपने अध्यापकों को दिया था उसका अब कोई मूल्य नहीं रह गया था। मिस गोवा जिन मानवीय मूल्यों के लिए आवाज़ उठाती थी, मिसिस हुसैन उन मूल्यों की च्युति ही उसमें दिखाया है। स्वार्थी प्रिंसिपल के हाथों एक स्कूल के नाश का इसमें चित्रण हुआ है।

4.6.12 स्वार्थता से ग्रस्त मानव

'चाँद तारों की शतरंज' कहानी में भी नासिराजी ने स्वार्थी मानव का चित्रण करके मानवीय मूल्यों का शोषण का चित्र दिखाया है। मामा कमरू ने फखरू तथा शेखू नामक दोनों भानजो के लिए पतंग बनाने का धंधा शुरू किया। उसके लिए पूँजी भी लगा दी। सारी रात पेट्रोमैक्स की रोशनी में बैठा कागज़ काटता, लोई पकाता, कमान बनाता, कांप चढ़ाता, लुगदी गूधता गुजर देता था। उनका होसैला बुलन्द था। कर्ज लेकर बडे पैमाने पर पतंग का धंधा करना चाहता था। फखरू तथा शेखू के बढ़ते काम से आसपासवालों के दिल में जलन फूट पडे थे। ओडर के अनुसार माल लेने लोग पहुँच तो पता चला कि गली के करीम पतंगवाले ने पूरे डिब्बे के पतंगों में छेद डालकर उसका नाश कर डाला था। आज मानवीय मूल्यों का ह्रास इतनी तेज़ी से ही हो रहा है कि कोई भी दूसरों की उन्नति देख नहीं पाता। आज मनुष्य में स्नेह और आदर का भाव खत्म होता

जा रहा है। सब स्वार्थों हो गये हैं। दूसरों को देखकर संतुष्ट होने का ज़माना अब बीत गया है।

'मटमैला पानी' में असलियत छुपाकर इन्सान से फायदा उठानेवाले मनुष्य ही बहुत ज़्यादा है। सैलाब से गाँव के उजड जाने पर सरकारी अफसर ने फुलवा को अधेड उम्र के आदमी के साथ भेज दिया। उस आदमी ने फुलवा को खाने पीने का प्रबन्ध कर दिया था। लेकिन कुछ दिन बाद फुलवा को उसका रखैल बनना पडा। धीरे-धीरे वह उसे कई पुरुषों के सामने भेंट करने लगा। अंत में वह अधेड की रखैल नहीं, पार्टनर बन गयी। एक दिन कार के नीचे दब कर वह अधेड मर गया। कुछ दिन बाद उसे वह घर छोडना भी पडा। उसकी जमापुंजी खत्म हो गयी थी। उसने पटरी के पास उस पुलिया पर सहारा लिया जिसके नीचे मटमैला पानी शहर की गन्दगी समेट बहता है। आज इनसान की असलियत को पहचानना बहुत मुश्किल का काम है क्योंकि कभी रक्षा के लिए आनेवाला मनुष्य ही भक्षक का रूप धारण कर लेता है। 'मटमैला पानी' ऐसी एक कहानी है जिसमें जटिलवृत्तियों पर नासिराजी के प्रकाश डाला है।

4.6.13 विस्थापन की अभिव्यक्ति

'जडे' कहानी में भारतीय मूल के युगांडा निवासियों की विस्थापित स्थिति का ही वर्णन है। युगान्डा के बाशिन्दों ने जो हत्याकाण्ड और लूट-पाट चलाई और उसमें गुलशन के मम्मी-डेडी औऱ बूढी दादी के साथ छोटा भाई भी मर गया। लाखों लोगों के घर भी जल गये। भारतीय मूल के यह युगांडा निवासी, ब्रिटीश सत्ता के समय मज़दूर बनकर आए थे। अपनी मेहनत और शिक्षित के दम पर ऊँचे पद प्राप्त किया। इस प्रगति में वे यह भूल गये कि ये उनका देश नहीं है। वे तो युगांडा में पूरी तरह घर बसकर उसे ही अपना देश समझने लगे थे। उनकी नागरिकता तो ब्रिटिश की थी। सत्ता का यह खेल

स्थानीय बाशिन्दें बर्दाश नहीं कर सके कि वे गुलाम बने और विदेशी उनके मालिक। इसकी अभिव्यक्ति कहानी में यूँ हुई है - "धरती के बेटे जाग उठे और उन सबके विरोध में हथियार बन्द हो उठी। अपने अधिकारों का उल्लंघन करते देखकर गुलशन समझ नहीं पा रही थी कि युगांडा में पैदा हुई यहाँ पली और बढ़ी तब कैसी इंडियन हो सकती है। उसके मम्मी-डैडी भी तो यहाँ पैदा हुए थे इंडियन थे, तो यहाँ क्या कर रहे थे। नहीं, नहीं यहाँ इंडियन नहीं युगांडा की है। कम्पाला शहर अपना शहर है। ये कौन थे, जिन्होंने हमको बर्बाद किया।"[1] इसमें नासिराजी गुलशन के ज़रिए भारतीय मूल के युगांडा निवासियों के तीव्र मानसिक तनाव का चित्रण किया है जो पीढ़ियों से एक शहर, घर, राष्ट्र में रहे हैं और अब उन्हें स्थानिय बाशिन्दें उधर से भगाने हैं। इसमें उन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया है भारत में हो या विदेश मानव ही है। सब कहीं भेद भाव दूसरों के अधिकांश की हज़पन आदि अनेक समान से है।

4.6.14 यहूदी और इस्त्रायली संघर्ष

'जातून के साये' कहानी में फिलिस्तिन मुल्क जो दुनिया के नक्शें पर बाकी नहीं बचा है उसका विवरण है। इसमें मुल्क के लिए गरिल्ला लडाई करके पकडे गये तौपीक की वीरता, देशप्रेम तथा अमर बलिदान का चित्रण उकेरा है। इस्त्रायली कमांडर का बार-बार प्रलोभन होने पर भी वह अपना देश शत्रुओं को सौपना नहीं चाहती इस्त्रायली कमांडर से अपनी जिन्दगी की भीख लेना नहीं चाहता है। इस पर तौफीक का आत्मगत - "मुझे कमांडर जिन्दगी की भीख देकर खरीदना चाहता है, वह क्या जाने कि जिसका जन्म ही दायरों और बंदिशों के बाहर खुले आसमान के नीचे हुआ हो और जिसने जुल्म की छाँव में ही आँखें खोली हो वह आज़ादी का मतलब, अच्छी तरह समझ सकता है,

---

1. जडें - नासिरा शर्मा - पृ. 21

उसे कोई बंधन बाँध नहीं सकता है, न कोई लालच उसे खरीद सकता है।"[1] फिलिस्तीन के सारे मर्द अपने मुल्क के लिए मोर्चों संभालकर जंगलों में रहते थे। औरतें घर में बच्चों को संभालती थी। इस्त्रायल मर्दों का बदला औरतों और बच्चों से चुकाते थे। गाँव के सभी नए उम्र के लड़के गोली से भून दिये गये। ऊपर से फेंके बम से घर, खेत-खलिहान, कुएँ, तलाब सब तबाह कर दिये-गये थे। चंद औरतें बच गई थी। वे झुटपुटे की किसी काम से जगल की तरफ निकल गई थी। उनमें तौफीक की माँ और दोनों बडी बहिने भी थी। जब वे अपनी गाँव लौटी तो अपने आँखों के सामने गिरते-गोलों तथा दम तोडते गाँव को देखकर घबराते हैं। उनके काँपते वजूद ने वही खुले आसमान के नीचे बिना किसी इंतजाम के तौफीक को जन्म दिया था। तब से आज तक तौपीक के परिवार ने आठ नौ जगहों और ठिकाने बदले हैं। कितनी बार खोमों में रहे, कितनी बार इस्त्रायली फौजों की निगरानी में बंदियों की तरह वर्षों गुजरें। इस पर तौफीक की बहिन शबिश खबरा उठती तो माँ उसे समझाती है - "यह हमारी नहीं फिलिस्तीन की तकदीर है, जो धरती अठारह बार विदेशी हुकुमत को छेलकर भी अपनी पहचान को न खाने की कसम खो बैठी हो, उसका मुकदर तो बस जहदोजहद करना रह गया है।"[2]

इस्त्रायली छावनी बम पडने से टुकडी हो गयी। केवल तौफीक बच गया। किन्तु वह अपनी कैदी अवथाम में कोठरी से बच नहीं पाया। बचने का कोई मार्ग न देखकर तौफीक के मन में मायूसी छा जाती है। वह सोचता है - "एक बार गाँव तबाह हुआ तो मैं अपनी ही धरती पर बंदी बना अपनों से दूर पडा है। क्या यहाँ से मैं कभी आज़ाद हो पाऊँगा? मुझे यहाँ कोई लेने आएगा। इन अंधेरी सुरंगों का सफर कब खत्म

---

1. जैतून के साये - नासिरा शर्मा - पृ. 33
2. वही - पृ. 34

होगा? हम फिलिस्तनी कब गुफाओं से निकलकर इनसानों की तरह-धरती को जोतेंगे? बोएँगे, फसले उगाएँगे?"[1] इसमें एक ऐसी जनता का दुःख तथा पीडा का चित्रण है जिन्हें तनाव की लंबी गलियाँ पार करने पडे। जीने की छटपटाहट में उन्होंने संघर्ष चलाया और अब भी चलता रहता है, वह तो रोमांचकारी है, साथ ही साथ दिल को दहलानेवाली है।

4.6.15 भूखमरो की समस्या

'काला सूरज' में यूथोपिया के भूखमरों की समस्या को ही उजगार किया है। रोज रात को साहब मोआसा एक ही सपना देखती कि उसके देश युथोपिया हरियाली तथा खुशहाली में नाचता है। खेत खलिहान अनाज से और घने सायेदार दरख्त फलों से लद गए है। रिमझिम बारिश हो रही है। बच्चे पानी से भरे गड्ढों में खेल रहे हैं और वह गोद में गदबदा सा बच्चा लिए उसे दूध पीला रही है। चूल्हे पर उबलती हाँडी भाप-उडाती खंदबद खंदबद पक रही है। आँखे खुल जाने पर राहब रो नहीं पाती है, क्योंकि उसके बंदन में पानी बचा ही नहीं था। वह फटी ज़मीन की तरह सूखी सिसकियाँ टुकडों में भरती है। फिर अपने सूखे लटके सीने को देखती हुई सोचती है कि चार बच्चे मर गये। कल यह भी मर जायेगा, इसे वह बचा नहीं सकती है। उसके पास सिर्फ सपने का सुख बचा है, जो वह अपने बच्चे को सुना सकती है। लेकिन छः मास का बच्चा सपना सुनकर नहीं हँसेगा।

रहाब उदास से अपने चारों तरफ देखती है और सोचती है "इन औरतों को अठारह, बीस बच्चे जने मगर अब इनकी गोद खाली है। शायद ऊपरवाले का भी रंग गोरा होगा, तभी तो उसने चाँद, तारे, सूरज सबको सफेद बनाया, जो भी काम-धाम होता है वह दिन में, रोशनी में, चहल पहल होती है। रात काली खामोशी और मौंत की बहन नींद को संग लेकर आती है, यह काला रंग सदा शोक और बदकिस्मती का निशान क्यों

है?"[1] एक ज़माने में युथोपिया अमूल्य वनसंपत्ति तथा धातुओं से समृद्ध थी। लेकिन उपनिवेशीकरण तथा नव उपनिवेशन की विकृतियों से उजडे युथोपिया तथा उधर के लोगों के अधिकारों के उल्लंघन का चित्रण इसमें है।

4.6.16 शरणार्थियों की समस्या

'मोमजामा' में लेबनान के बंदी और सिरिया के जबीबा जो पढ़ाई के लिए भारत आये थे। वह पढ़ाई खत्म करने पर भी अपने स्वदेश लौट नहीं सके। लेबनान में लडाई छिड गई और जबीबा के घरवाले सिरिया के सियासी मामलों में फँसने के कारण उसके लिए सिराया का दरवाज़ा बंद हो गयी थी। शरणार्थी बनकर भारत में टहरे जबीबा और बदी लबीबकारी से तंग आकर शादी कर ली। पहली बच्ची जब दो वर्ष की हुई तो उनको लेबनान लौटने का मौका मिला। लेकिन लेबनान में सियासी मामलों में फँसने के कारण अपनी बच्ची को स्वदेश में छोड़कर रातों रात दुबारा भारत लौटना पडा। भारत के तंगहाली में जीवन बिताते रहे। वर्षों के लंबे इंतज़ार के बाद उन्हें लेबनान के लिए विज़ा मिला। अपने बेटी से जल्दि मिलने की उत्सुकता से स्वदेश लौटे। लेकिन घर के पास पहुँचने पर पता चला कि बम गिरने से आस पास के घरों के साथ उसका घर भी उजड गया था। केवल एक लड़का-अब्बास जिन्दा बचा है। वह बम गिरने के वक्त शहर की तरफ गया हुआ था। जबीबा के मन में ऐसी शंका उमड पडी थी कि लेबनाने में रहने से जिन्दा नहीं बचेगे। सरहद पार करने में तो खतरा है। सिरिया भी जा नहीं सकते। अपनी सही पहचान छुपाकर रहने के कारण अपनी डाक्टरी का डिग्री भी बाहर निकाल नहीं पाता। लेबनान में धर्म उसके पैर की बेडी बन गया है और सिरिया में विचारधारा उसके परिवार को नष्ट कर गई। जबीबा हालात के मार से उसकी जिन्दगी को मोमजामे

---

1. कालासूरज - नासिरा शर्मा - पृ. 50

में बदल दिया है। यहाँ सियासी झगडे में अपने अधिकारों से वंचित बंदी तथा जबीबा का दर्दनाक चित्र है। सियासी घटनाओं के काले बादल तौहर देश पर लहरा रहे हैं।

4.6.17 प्रवासी जीवन और उनके मानसिक द्वन्द्व

'मिस्टर ब्राउनी' में भूरलाल को गली के बच्चे मिस्टर 'ब्राउनी पुकारते हैं। वह एक कश्मीरी है मगर अब स्कॉटिश बन गया है - सेकण्डसिटिज़न। मोहल्ले में उसका असली नाम कोई नहीं जानता है। पिछले दो सौ साल से 'स्कॉटलेण्ड में रहने के बाद भी बेंधुआ मज़दूर ही रहा। कभी-कभी काश्मीर लौटने की बात मन में उठने लगती है। लेकिन स्वदेश लौटने पर बेकारी, महंगाई, तथा असुरक्षा का नरक भोगना पडेगा। जिस धरती पर वह अपनी गृहस्थी की बुनियाद डाल चुका है, वहाँ से उसको निकाल देने के लिए ब्रिटिश सरकार एडी-चोडी का ज़ोर लगाए हुए हैं। बारिश के पहले वह ऐसा ठिकाना ढूँढ ले जहाँ वह भीगने से बच सके। लेकिन दिल्ली से पत्नी के घरवालों का पत्र उन्हें लगातार मिल रहे थे। उसमें यह लिखते हैं कि गाँव में जिन्दगी दिन-ब-दिन कठिन होती जा रही है। पत्र पढ़कर भूरेलाल सोचते हैं, दूर के ढोल सुहावने लगते हैं। इसमें यह भी दिखाया है कि मनुष्य जीवन देश में हो या विदेश में कही भी सुरक्षित नहीं है। भूरेलाल का जीवन स्कॉटलेण्ड में सुरक्षित नहीं थे। वह चाहने पर भी स्वदेश लौट नहीं सकता। भारत में सियासी काली घटाएँ मुँह बाये खडी है। पिछले दो सौ साल से उनके पूर्वज स्कॉटलैण्ड में रहे थे। फिर भी आज तक उसे स्कॉटिश जनता का अधिकार प्राप्त नहीं हुआ है। आज भी बंधुवा मज़दूर होकर जीना पडता है। उसके लिए सेकण्ड सिटिज़न का ही अधिकार दिया गया है।

4.6.18 सरहद के नियमों से अनभिज्ञ मानव

'काशीदाकारी' में डी.आई.जी रामकुमार के सामने एक दिन सुरक्षा बल के जवानों ने मछेरों की एक पूरी बारात लाई। जो रंग बिरंगी तहमदों और सर पर अगोंछा डाले नदी पार कर बंगलादेश से है। वे यह नहीं जानते थे कि किसी कानूनी आज्ञा पत्र, कागज़ी पत्र के बिना दूसरे देश की सीमा में दाखिल होना अपराध है। ये लोग रोज़ तैर कर उस पार पहुँचते और फिर लौट के इधर आ जाते है। उनके लिए नदी के दोनों पार अपने हैं। उसमें पूछने की कोई ज़रूरत नहीं समझती। डी.आई.जी रामकुमार अजीब दुविधा में पड गये। उनकी निरीहता पर रामकुमार ने सोचा "घर-आँगन, गाँव गली को बाँटनेवाली वह लकीर धरती पर कंगूरे की तरह उभर आये है, इतने कुछ गुजर जाने के बाद।"[1]

इसमें सरहद के नियमों से अनभिज्ञ मछेरों की विवशता का ही चित्रण है। शायद उन्हें बंगलादेश बनने की खबर न हो। अगर खबर हो भी तो सरहद के बँटवारे का सच ये नहीं जानते हैं। यह सच उन्हें कैसे समझाया जाए, जिनके लिए जल की धारा एक है। लोकगीत की जमीन एक है आसमान का रंग और नदी के उठते उफान की भाषा एक है। मगर धरती पर सरहदों की काशीदाकीरी करनेवाले इस सच से किस कदर बेखबर है।

4.6.19 इंसानों के बीच खडी इंसानियत

'पुल ए सरात' में लैला इराकी लड़की है। जिसकी शादी ईरानी लडका हुसन के साथ हुई थी। शादी के छः महीने बाद जब ईरान ईराक युद्ध छिड़ गया तो हुसन युद्ध के मैदान में गया था। तब से लैला के मुकद्दर में सोना नहीं। लैला को ऐसी ही लगा कि

---

1. काशीदाकीरी - नासिरा शर्मा - पृ. 100

इराक पर गिरा हर ईरानी बम सीधे उसे दिल पर वार करता था। तबाह बस्तियाँ जाने क्यों उसे गुनाह का अहसास दिलाती थी। अपनी सहेली नेदा के खत से उसे पता चला कि ईरानी इस्लामी फौज में भर्ती हुए उसके पति हुसन बसरा के समीप मजनून द्विप में कैद हो गया है। अपने देश में विदेशी कैदी। आज कल रात के अंधकार में लैला के लिए नींद बडी कीमती चीज़ हो गई है। लैला हुसन की सोच में डूब जाती है - "तुम इस वक्त क्या कर रहे होगे भला? इस शहर में इस देश में इन सडकों पर पूर्व से पश्चिम उत्तर के दक्षिण चारों दिशाओं की यात्राएँ तुम ने की है। इस जमीन के मौसमों ने तुम्हें सहलाया है। बहुतों ने तुम्हें गोदियों में खिलाया है। तुम इस चार दीवारों में बैठकर क्या सोच रहे होगे? क्या इस जमीन ने तुमसे कुछ सवाल किया कि आखिर तुमने इसके खिलाफ हथियार क्यों उठाया।"[1] इसमें दोनों देशों के आपसी झगडे ने अपने अधिकारों से वंचित हुसन तथा लैला का ही चित्रण है। ईरान ईराक झगडे में ये दोनों पति-पत्नी शत्रु बन जाते हैं।

4.6.20 फर्ज बनाम इनसानियत

'तारीखी सनद' ईरानी पृष्ठभूमि की कहानी है। मैदाने जाले के हत्याकण्ड में शाह के किसी सैनिक की बेटी, महवश, बेटा हसन और पत्नी जैनब के साथ सैकडों निहत्थे मारे जाते हैं। शाह की आशा का पालन करना उनका कर्तव्य है। ये सैनिक सरकार के विरुद्ध आवाज़ उठानेवाले इन निरीहों को मार डालने के लिए विवश हो जाते हैं। वे चाहे उनके भाई हो बहिन पत्नी या बेटा या बेटी। वे यह भी नहीं जानते की उनका खुसुर क्या है? वे तो केवल शासकों के हाथ के खिलौने हैं। कथावाचक सैनिकों पर होनेवाले अत्याचार देखकर हवाई फयर कर लेता है। उसे ऐसा लगता है कि उसने बडा अपराध किया है। फौजी ट्रेनिंग को मिट्टी में मिलाया। वह नमकहरामी तथा धोखेबाज

---

1. पु.ए. सरात - नासिरा शर्मा - पृ. 120

निकला। इस मानसिक संघर्ष के परिणाम स्वरूप वह खुदखुशी कर लेता है। इस कहानी में शाही शासन में अपने पत्नी तथा बच्चों को भी मार डालने के लिए विवश शाही सैनिक का ही चित्रण किया गया है।

4.6.21 इंसानी मोहब्बत का पैगाम

'यहूदी सर गर्दन' में हार्ट स्पशलिस्ट डॉ. बोरहान ईरान के यहूदी है। जब तोहरान में गजब की गडबड शुरू हो गई तब वे अमेरिका में थे। ईरान लौटा तो सारे देश का नक्शा ही बदला हुआ था। धर्म की जोंक खून पीने के लिए ईरान के जिस्म पर चिपक गई थी। उनका सुकून सभ्यता तथा संस्कृति को अरब इस्लाम रूपी धर्म के बुलडोसर से उखाड़ फेकना चाहते थे। तीन सौ वर्षों की अथाह कोशिश के बाद भी वे यह काम अंजाम नहीं दे पाए। देश की इन हालातों से उन्हें पेरिस जाना पडा और उन्हें यह भी पता नहीं कि पेरिस में कब तक रहेंगे। ईरानी कौम की यह सरगदानी कब तक समाप्त होगी। डॉ. बोरहान अपने परिवार को पेरिस भेजने के लिए पाँच टिकट भेजनेवाले थे। लेकिन इसके पहले ही वे पाँचों धर्म की ज्वाला में जलकर राख हो गये। डॉ. बोरहान इस सदमे को झेल नहीं पाये। वे जितना अपने को संभालने की कोशिश कर रहे थे, उतना ही उनका चेहरा दुःख का अईना हो रहा था। उनके मन में यही विचार होता है कि कल तक वतन न था, आज अपना कोई न रहा। थोडी देर में हार्ट-अटैक से उनकी मृत्यु हो गयी। इस कहानी में ईरान-ईराक लड़ाई के साथ ही साथ ईरान के आभ्यंतर प्रश्नों पर भी प्रकाश डाला गया है। ईरान के सारे धर्मों पर खास कर अरब इस्लाम आधिपत्य तथा उनके अधिकारों के उल्लंघन की ओर ही इशारा है। ईरान में इस्लाम धर्म की अभिव्यक्ति पिछले चौदह सौ वर्षों से खून खराब कत्ल ही रही है।

4.6.22 बदलती हालातों पर मानवीय संवेदना

'ज़रा सी बात' कहानी में ईरान की बदलती हालातों में शाहराम बहुत दुःखी है। उसे न खाने में दिलचस्पी रह गई है, न खेलने-कूदने में। वह हमेशा सोच में डूबी रहती है। उसे वह सब कुछ याद आता है जो खो गया है। अपना स्कूल जाना, पिकनिक में, पहाड पर चढ़ना, सडक पर हँसते मुस्कुराते आइसक्रिम खाना और पार्क पर बैठ बीजों को फोडते हुए गप्पे मारना सब खो गया है। ईरान की क्रांति में सारे स्कूल, कॉलेज, बन्द हो गए है, और आसपास के घरवालों ने अपने बच्चों को अमेरिका जैसे राष्ट्रों में भेज दिये है। लेकिन शहराम के घरवाले उसे विदेश में पढाई के लिए भोजने में देरी की। अब ईरान में नया कानून ही ऐसा बन गया है कि लाख कोशिश करने पर भी पढ़ाई के लिए बच्चों को बाहर भेज नहीं सकते। यह सोचकर शहराम दुःखी हो जाती है। वह हमेशा अपने बचपन की सहेली सूसन की यादों में डूब जाती है जो ईरानी क्रांति में मिट चुकी थी।

इस कहानी में शहराम ईरान की क्रांति में झुलस गये लडके लडकियों का प्रतिनिधित्व करती है। ईरान के क्रांतिकाल में बूढे, जवान बच्चे सब घुटन का अनुभव करते थे। वे खुली साँस का आनन्द नहीं उठा पाते थे। बच्चों को स्कूली एवं कालेज जाने के अधिकारों से भी वंचित किया गया था। ईरान क्रांतिकाल में ईरानी जनता के अधिकारों का पूरा उल्लंघन किया गया था।

'खालिश' कहानी में भी ईरानी क्रांति का चित्रण हुआ है। सोहराब के पिता अपने बेटे को विदेश भेजकर पढाने के लिए पैसा इक्कट्ठा करते हैं। किसी फौजी अफसर की विधवा बुढिया को अपने मित्रों के साथ खाली मशीनगन दिखाकर धमकी देता है। उसके औलादे विदेश में थे। वे चकराकर गिरते हैं और दम तोड देते हैं। सोहराब अपने मित्रों के साथ इनकलाब के सिपाही कहकर एक घर में जाकर पूरी घर की तलाशी

ली। उनके धार्मिक किताबों को सडक पर उल्ट दी। उस घर की बूढी औरत रोते रोते अनुरोध करने लगी कि वे उधर आग मत लगाये। निरीहों पर होनेवाले इस अत्याचार को देखकर आसपास के घरवाले रातों ही रात घर से भाग निकलते हैं।

इस कहानी में एक ओर क्रांति के समय छदमवेश धारण कर साधारण जनता का शोषण करनेवालों का चित्रण हुआ है। दूसरी ओर इसमें ईरान में अरब के आधिपत्य को ही दिखाया है। क्रांति के समय अत्याचार से भयभीत होकर लोग अपनी सारी संपत्ति छोड़कर पालायन करते थे। इसे देखकर मानवता काँप उठती थी।

4.6.23 स्त्री बहादुरी का दास्तान

'गूंगा आसमान' में फरशीदा ईरान के एक पुलिस अफसर है। उनकी चार बीवियाँ है। वे सत्ता के बल पर सत्ता के विरोधियों के खुबसूरत पत्नियों तथा लड़कियों को उठाकर घर में डालते हैं। उनसे निकाह पढवाकर अपने गुनाहों को नैतिक बना दिया। मेहरअंगीज सबसे बडी और फरशीद की असली व्याहता थी। दूसरी माहपारा तीस साल की जवान औरत भी और पति के मरने के बाद फरशीद के हाथ में आ गये थे। तीसरी तथा चौथी बीबियाँ दिलाराम और शबनूर तो अभी बच्चियों थी। दुनियावाले उन्हें अपनी लडकियाँ मानते थे। मेहर अगीज़ उन्हें पिजडे से मुक्त करने के उद्देश्य से फरशीद के फाइल से तीनों के निकाहनामे निकालकर फाड डाला। घर के बाथरूम में आग लगाकर उन्हें बाहर निकाल दिया। फिर दोपहर को चारों टैक्सी मंगवाकर घर से निकली और मेहर अंगीज ने उन्हें सुरक्षित स्थान पहुँचा दिया था। जब फरशीद को इसका पता चला तो वह अपने प्रतिद्वंद्वी को हराने के लिए घर में कुछ औरतों और पाँच लड़कियाँ पकडकर लाई गई। मेहर अंगीज पर औरतों का धंधा कराने का आरोप लगाकर उसका बदनाम कर देता। इसमें सत्ता की आड में होनेवाले शोषण का ही चित्रण है। पुलिस

अफसर फरशीद जो अभागों तथा निरीहों का आश्रय होना चाहिए था, उसका रक्षक होने के बहाने उसका भक्षक बन जाते है। इस कहानी में नासिराजी यही दिखाती है कि हमारे देश में शांति तथा अमन के लिए कर्तव्य निरत पुलिसों से जनता को शांति तथा अमन कभी नहीं मिलते। वे देश के लिए मिले अपने अधिकार का दुरुपयोग करते हैं।

4.6.24 स्त्री की बुनियादी अस्मिता

'फिर कभी' में गालियों के बच्चे मीनाक्षी तथा उसकी सहेलियों का चित्रण है जो पाँच से दस वर्ष के उम्रवाले है और सब घर से भागकर या रास्ता भाडककर दिल्ली स्टेशन पहुँची थी। वे लोग रेलगाडी में सामान बेचकर जीविका चलाती थी। मीनाक्षी ने उन्हें समझाया कि उन छत्रों के साथ रहने में फायदा नहीं। दुनियावाले उन्हें जीने नहीं देगे। एक दिन रेलगाडी में किसी बडे नेता का कोई अटैची केस चोरी हो गयी तो उन गलियों के बच्चों की शामन आयी। पुलिसवालों ने उन छठों लडकियों पर टूट पडे और सबको स्टेशन लाये गये। उनकी वकालत करनेवाला कोई नहीं था। शाम ढलने पर उन्हें छोड भी दिया। लौटते वक्त मीनाक्षी को पता चला कि नेताजी अटैची नहीं लाए थे। वह तो गवर्नर हाउस में छूट गई थी। इसपर मीनाक्षी के मन में यही विचार हुआ कि इन सिपाहियों के हाथों में हथकडी पहना दे ताकि फिर वह कभी किसी बच्चे को बेकसूर कानून के कटघरे में लाकर खडा न कर सके। लेकिन अपनी इच्छा को दबाकर बाहर निकली और सिर को झटकें से हिलाकर बोली फिर कभी। इस कहानी में नासिराजी यही दिखाया है कि लडकियाँ अपनी लाचारी से घर से भाग आयी है और मेहनत करके दो रोटी कमा लेती है। लेकिन हमारा समाज उन्हें जीने नहीं देता। उनके भविष्य को अंधकारमय बना देता है।

ईरान क्रांति के समय जिन औरतों ने सियासत के कूदी उन्हें कठिन यातनाओं को सहना पडा था। जेल के अधिकारियों द्वारा उनका शारीरिक शोषण होना साधारण सी बात थी।

4.6.25 संवेदनशील इनसान की फनकार

'पत्थरगली' की फसीदा के सपने है कि मुक्त पंछी की तरह आकाश में उडना लेकिन मुस्लिम परिवार में जन्मे वह उस दमघुटते वातावरण में अपने आपको निरन्तर मिटता हुआ महसूस करती है। फरीदा को भौतिक सुख और सच्चे प्रेम की कतई इच्छा नहीं है। उसे एक सम्मानित इनसान की तरह जीने नागरिक के सारे अधिकार पाने तथा मानसिक स्वतंत्रता के साथ परिवार में साँस लेने की इच्छा थी। फरीदा के घर में जीवन मूल्यों के अतिरिक्त कुछ बचा नहीं था। ऐसी हालात में पिसते घराने जो नया स्वीकार करने की स्थिति बना नहीं पाते तथा पुराना छोडने में डरते हैं। उसे तो माँ की देख-रेख, भाई बहनों का प्यार चाहिए। लेकिन घर के सबने उसे ही घुरी बनाकर सारी समस्याओं का हल ढूँढना चाहा है। फरीदा सहते-सहते विद्रोह कर लेती है। नतीजा यह होता है कि उसे पागल या जिन्न से ग्रसित समझकर घरवाले उसकी हकीमी इलाज करती है। अंत में पागल करार देकर पागल खाने में भर्तो करा देते हैं। इस तरह एक होनहार पढी लिखी भावुक कल्पनाशील युवती का दुःखद अंत होता है।

'पत्थर गली' कहानी की प्रमुख किरदार फरिदा है, मुस्लिम सामंती समाज में जन्मी फरिदा अपनी परिस्थितियों के खिलाफ, पारिवारिक शोषण के विरुद्ध विद्रोह करती है। पर कोई नतीजा नहीं निकलता है। अंत में उसका भाई उसे पागल ठहराकर पागलखाने में भरती कराता है, जहाँ उसे घर के पागलखाने से अधिक खुला वातावरण मिलता है।

4.6.26 मानवीय जिजीविषा की खोज

'अपराधी' कहानी राम मनोहर त्यागी पर केन्द्रित है। जो रिटायर्ड एस.पी है। रिटायर्ड होने के बाद उन्हें अकेलापन कचोटने लगता है। इससे वे कुंठित होने लगते हैं। छूत-अछूत के कारण वे दूसरों के घर कभी नहीं जाते। अपना मन बहलाने के लिए वे

एक महीने के लिए अपने गाँव चले जाते हैं। लेकिन पद्रह दिन रहकर ही वापस आते हैं। त्यागी मन की खोई हुई शांति पाने के लिए अपना ज्यादा समय भगवान की पूजा-पाठ करने में ही देते हैं। उनका बेटा पिता के लिए विशेष चिंतित रहता है इसी कारण वह अपनी सोसायटी के लोगों को अपने घर बुलाकर सभी से उनका परिचय भी कराता है, लेकिन त्यागी जी का अकेलापन उनका साथ नहीं छोडता है। त्यागी एक दिन ऐसे ही उनके मित्र चतुर्वेदी के घर जाते हैं। वे समझते थे कि चतुर्वेदी माँस-मच्छी नहीं खाते है। उनके घर जाने पर उन्हें मालूम पडता है कि वह मांस मच्छी खाते हैं। त्यागी उनके घर से बिना पानी लिए वापस अपने घर चले आते हैं। तब उनका बेटा कहता है - "ये सब बडी छोटी बाते हैं पापा। यहाँ आप जितना देखेंगे उतना ही लगेगा कि आप कुछ नहीं जानते हैं। हर आदमी आपके पैमाने से अलग है। हर सच झूठ लगता है और झूठ सच। अपने अतीत को याद आकर अंत में त्यागी जी जड बन जाते है और अपने आपको अपराधी भी मानते है और अपने को बदलते है। यह बदलना ही इंसानी स्वबाव है। मानवीय संवेदना को नष्ट करके जीनेवाले त्यागीजी का चित्रण इस कहानी में किया है।

4.6.27 प्रसिद्धि के भाग दौड में फसे इनसान

'दुनिया' कहानी में प्रसिद्धि के आगे नष्ट हो रही मनुष्य की संवेदना का चित्रण है। शोभना इस कहानी के उच्च वर्गीय पात्र है, जो कॉलेज की प्रिंसिपल है। उसे प्रसिद्धि की बहुत प्यास है। गाँव से कई बार उसके पिता की बीमारी के बारे में खत आते रहते हैं लेकिन शोभना इसे अपनी व्यस्तता के आगे गंभीरता से नहीं लेती। एक दिन पिता की मृत्यु की खबर उसे मिलती है तो उसे बहुत दुःख होता है। पति सुरेश उसे समझता है और टिकट बुक कर उसके जाने की व्यवस्था करता है। लेकिन जिस दिन वह

---

1. नासिरा शर्मा - इंसानी नस्ल - पृ. 28 (अपराधी कहानी)

जानेवाली थी, उसी दिन उनके कॉलेज में मीटिंग लगती है और उस दिन दोपहर में मुख्यमंत्री के दावत का कार्यक्रम भी था। शोभना को लगता है कि अगर गाँव गई तो मुख्यमंत्री से फिर कभी मुलाकात नहीं हो पाएगी। इसी कारण वह गाँव जाना रद्द करती है। अपने पिता के प्रति उसकी सोच संवेदनहीनता का चरम है और महत्वाकांक्षा का भी। जब उसके पति इसके बारे में टोकता है, तब वह कहती है - "मैंने तो बाबा को नही मारा, न उन्हें मारने का षड्यंत्र रचा। आखिर वह बूढे थे, ऊपर से बीमार, उन्हें जाना ही था। एक दिन इसी तरह सबको जाना है, इसमें नई बात क्या है? मौत सच्चाई है, मगर वह भी एक कड़वा यथार्थ है कि वह संसार किसी की मौत से थमता रुकता नहीं है। सब कुछ पूर्ववत चलता रहता है।"[1] वह अपने निर्णय पर अहिंसा रहते हुए मीटिंग को महत्व देकर संवेदनशून्यता की प्रतीति देती है। शोभना का स्टेटस का दंभ ही उसे दुनियावी बना देता है। किसी की न सुनना जो लाभ में जाता है उसी को स्वीकार करना, अपनी सत्ता को सदा संचालित करके विस्तार की तरफ बढ़ना ये सारी प्रवृत्तियाँ एकाएक शोभना के अन्दर से नहीं उभरी थी बल्कि धीरे-धीरे शोभना ने स्वयं इनका पालन पोषण करके अपने व्यक्तित्व के रूप में बनाया था। जब पति उसे सचेत करके टोकता है तब वह कहती है कि - "मुझे उपदेश मत दिया करो। यह आदत मुझे झुझलाहट से भर देती है।" पति-पत्नी के ऐसे संबन्धों से संतान भी प्रभावित होता है। आज की दुनिया विशेषकर नगर जीवन के कुछ लोग इस तरह प्रसिद्धि के पीछे भागते रहते हैं।

4.6.28 संप्रदायिकता की आग में झुलस्ता मानव

'इन्सानी नस्ल' कहानी संप्रदायिकता पर आधारित कहानी है। मिश्रजी और अय्यूब पडोसी है। मिश्रजी के कोई संतान नहीं है। अय्यूब के तीन लडके थे। दिलशात

---

1. इन्सानी नस्ल (दुनिया) नासिरा शर्मा - पृ. 86

अपने दोनों भाइयों से अलग है। वह मिश्रजी के यहाँ गोद जाता है। लोग तो यही कहते हैं कि मिश्रजी के दो और अय्यूब के एक बेटे हैं। दिलशात हिन्दु के घर में गोद तो चला जाता है। लेकिन जब नवाब अपनी माँ से सविता को अपनी पत्नी बनाकर उसे घर में लाने की बात कहता है तब माँ कहती है कि "दूसरे मजहबवालों से दोस्ती हो सकती है, मगर नस्ल नहीं चल सकती, अपनी कोख से अपना बच्चा पैदा किया जा सकता है, पराया नहीं।"[1] वह एकदम इसका विरोध करती है। घरवालों के विरोध के बावजूद नवाब सविता से शादी करके दिल्ली चला जाता है। कई वर्षों के बाद उसे माँ की बीमारी का तार मिलता है। वह अपनी माँ को देखने गाँव जाता है, तब उसकी भाभी दोनों पर ताने कसती है। भाभी की बातें सुनकर सविता दुःखी होती है, लेकिन वह अपने आपको संभालता है। घरवालों नवाब को अच्छी तरह स्वागत किया। सविता को अपना ससुराल अच्छा लगने लगता है। रात को जब नवाब का भाई मुहल्ले के दूसरे लडके के साथ अपना सामान दिल्ली भेजने की व्यवस्था करता है। बहुत बार पूछने के बाद नवाब को दिलशाद का दोस्त बताता है कि पासवाले गाँव में हालात तनाव भरे है। लोग कुछ भी कर सकते हैं सबको पता है तुम सविता भाभी के साथ आए हुए हो और हमें कुछ आशंका है। नवाब के विरोध को अनदेखा करते हुए उसे सविता के साथ दिल्ली भेज देता है। इसमें नासिरा शर्मा धर्म के मानवीय पक्ष की पहचान कराती है तथा धर्म और सांप्रदायिकता के फर्क को रेखांकित करती है और इन्सानी नस्ल कहानी में धार्मिक रूढिवादी संकीर्णताओं का सुन्दर चित्रण करती है।

'असली बात' कहानी में भी नासिराजी ने सांप्रदायिकता और कठमुल्लेपन के इर्द-गिर्द सामाजिक वैमनस्य का चित्रण किया है। खान-पान, या धर्म अथवा मजहबी मान्यताएँ मनुष्य मनुष्य के बीच जो दूरियाँ बनाती है, उन्हें मानवीयता का पैमाना नहीं

---

1. इंसानी नस्ल - नासिरा शर्मा - पृ. 128

बनाया जा सकता है। 'असली बात' के माध्यम से नासिराजी सांप्रदायिकता की समस्या के मूल रूप जानने का प्रयत्न किया है। इस कहानी में उन्होंने हिन्दु और इस्लाम धर्म के मानवीय उसूलों को जिस तरह से प्रस्तुत किया है, वह महत्वपूर्ण है। मंदिर, मस्जिद और मज़ार आदि मानवीय भावनाओं के प्रसार में धर्म अपनी मानवीयता को पूरे मनुष्य समाज के हित में रूपान्तरित करता हैं। पुलिस की नौकरी करनेवाला भी मनुष्य होता है। उसकी भी मानवीय भावनायें होती है। कर्फ्यू की हालात में भी सिपाही रामदीन का व्यवहार और नवरात्री के अवसर पर मंदिर के पूजारी और दरगाह के मुजाविर का संदर्भ कहानी का महत्वपूर्ण अंश है। यह इसमें बताया गया है कि कोई भी धर्म और इबादतगाह लडने की शिक्षा नहीं देता है। सांप्रदायिकता गरीबों के हित में नहीं, कर्फ्यू उन्हें दाने-दाने के लिए मोहताज़ कर देता है। तबोलन ओर उसके बच्चे के माध्यम से भूख और बीमारी की यातना और उससे मुक्ति का प्रसंग भी धर्म और पूजा के मानवीय स्वरूप को ही सामने लाता है। सांप्रदायिक शक्तियों को जवाब देना सच्चे धर्म का ही रूप है। पीर-औलिया इंसानों में फर्क नहीं करते। यह दर सबके लिए खुला है। यही असली बात है जो आज के इस मार काट और विनाश भरे वैश्विक समय में हमारे जीवन को सुन्दर बना सकती है।

निष्कर्ष

नासिरा शर्मा की कहानियाँ गहरी मानवीय संवेदनाओं से भरी रचना है। उनके साहित्य में अतीत का गौरव, वर्तमान का सही मार्गदर्शन और भविष्य को उज्ज्वल और संपन्न बनाने की चेष्टा भी है। वह हमारी मन पर गहरी छाप छोडने में समर्थ है। उन्होंने अपने साहित्य द्वारा इन्सान को इन्सान बने रहने के लिए प्रेरित किया है। लोगों को अपमान, शोषण एवं अत्याचार के खिलाफ खडा करना ही उनके लेखन का उद्देश्य रहा है। उनके लेखन का फलक देश और विदेश की असीमित परिधियों में फैला दिखाई देता

है। एक ओर उनकी कहानियों में ठेठ भारतीय पात्र अपने परिवेश की अभिव्यक्ति करते हैं तो दूसरी ओर उसमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ज्वलन्त मानवीय समस्याओं का परिचय भी है। उन्होंने भौगोलिक सीमा का बंधन तोडकर ईरान के क्रांतिकाल की मानवीय पीडा का चित्रण करते हुए अपने द्वारा सात समंदर पार के लोगों के दर्द को वाणी दी है।

नासिरा शर्मा मानवतावादी दृष्टिकोण रखनेवाली लेखिका है। उनकी कहानियों में मानवीय जिजीविषा की खोज है। आज तो यहाँ मानवीयता को मिटाने के लिए तरह-तरह के कुचक्र रचे जा रहे हैं, जहाँ मनुष्य को बाँटने और लडाने के लिए एक रक्तरजित और नफरत भरा षड्यन्त्र किया जा रहा है, नासिराजी की कहानियाँ मनुष्य की मानवीय संवेदन को उसके मूल धरातल पर जाकर खोजती है। नासिराजी धर्म या संप्रदाय के आधार पर होनेवाली समस्या अपनी कहानियों में चित्रित किया है। धर्म इंसान की असली समस्या नहीं, उसकी असली समस्या दुनिया के अन्य इंसानों के साथ उसके रिश्ते है। हमारे इस दुनिया में एक ऐसा वर्ग है जो अन्य वर्ग का शोषण करके जीता है। वे शोषित वर्गों केलिए लडती है। वे अपनी कहानियों में मानवतावादी दृष्टिकोण रखती है। उन्होंने कहानियों का सृजन मानव मात्र के लिए ही किया है।